ALFAVISION OVERSEAS (INDIA) LIMITED

Date: February 16th, 2026

To,
BSE Limited,
Phiroze Jeejeebhoy Towers,
Dalal Street,
Mumbai - 400 001

Scrip Code: 531156
Trading Symbol: ALFAVIO

Sub: Newspaper Advertisement-Unaudited Financial Results for the quarter ended December 31st, 2025.

Dear Sir/Madam,

Pursuant to Regulations 47 of the SEBI (Listing Obligations and Disclosure Requirements) Regulations, 2015, please find enclosed herewith the newspaper advertisement for the unaudited Financial Results of the Company for the quarter ended December 31st 2025, published on 15th February, 2026 in the newspaper "Global Herald."

These are also being made available on the Company's website at www.alfavisionoverseasindia.com.

This is for your information and records.

Thanking you,

Yours faithfully,

For Alfavision Overseas (India) Limited

RAVI GOYAL Digitally signed by RAVI GOYAL Date: 2026.02.16 11:18:58 +05'30'

Ravi Goyal
Director
DIN: 02839450

सम्पादकीय

उप्र सरकार का ऑपरेशन लंगड़ा..

उत्तर प्रदेश में पिछले कुछ वर्षों में अपराध के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिए हैं। उसके बाद उत्तर प्रदेश में दो शब्द खूब चर्चा में रहे हैं- ऑपरेशन लंगड़ा और ऑपरेशन बुलडोजर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ऐसे ही शासन व्यवस्था की पहचान बन चुके हैं। राज्य सरकार का दावा है, इन अभियानों ने अपराधियों में भय पैदा किया है। उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था मजबूत हुई है। वहीं आलोचकों का कहना है, इन कार्रवाइयों ने विधि-व्यवस्था के साथ-साथ संवैधानिक सिद्धांतों पर भी गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। उत्तर प्रदेश में पुलिस राज कायम हो गया है। शासन की सरपरस्ती में उत्तर प्रदेश की पुलिस बेखौफ हो गई है। अपराध कम होने के स्थान पर बढ़ते चले जा रहे हैं। हां पुलिस को लेकर आम आदमी भयभीत है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। इसका कब कौन शिकार हो जाएगा, इसको लेकर आम नागरिक हमेशा असमंजस में रहते हैं। रही सही कसर धार्मिक ध्रुवीकरण के कारण उत्तर प्रदेश में भय एवं आतंक का वातावरण बना हुआ है। ऑपरेशन लंगड़ा शब्द उन पुलिस मुठभेड़ों के लिए प्रचलित हुआ, जिसमें आरोपियों के पैर में गोली लगने की घटनाएं बड़े पैमाने पर सामने आई हैं। कई मामलों में अदालतों ने पुलिस की कार्यवाही के खिलाफ टिप्पणी की है। कानून के हिसाब से पुलिस की भूमिका आरोपी को पकड़कर न्यायालय के सामने प्रस्तुत करना है, नाकि आरोपी या अपराधी को सीधे दंडित करना है। इलाहाबाद हाईकोर्ट स्पष्ट कर चुका है, न्याय करने का अधिकार अदालत के पास है, पुलिस के पास नहीं। यदि उत्तर प्रदेश की हर मुठभेड़ की कहानी एक जैसी हो, आत्मरक्षा में गोली चलाने से अपराधी की मौत या अपराधी के पैर में गोली लगना, इन दोनों को न्यायपालिका, पुलिस द्वारा कानून का उल्लंघन मानती है। जिस बड़े पैमाने पर उत्तर प्रदेश में इस तरह की घटनाएं बढ़ती चली जा रही हैं, उसके बाद न्यायपालिका की भी चिंता बढ़ती जा रही है। ऑपरेशन बुलडोजर के तहत अवैध निमार्णों को हटाने की प्रशासनिक कार्रवाई पर न्यायपालिका द्वारा विरोध जताया गया है। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के स्पष्ट निर्देश होने के बाद भी सरकार का तर्क है, यह कार्रवाई कानून के तहत की गई है। अवैध संपत्तियों और अपराध से अर्जित परिसंपत्तियों के खिलाफ कार्यवाही है। पुलिस को यदि रक्षा के लिए हथियार दिए गए हैं तो वे देखने के लिए नहीं बल्कि चलाने के लिए हैं। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों द्वारा कई बार बिना पर्याप्त नोटिस या बिना सुनवाई के घरों को गिरा दिया गया। जिससे न्यायिक प्रक्रिया को लेकर सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट कई निर्देश जारी कर चुकी है। सरकार द्वारा उन आदेशों और निदेर्शों पर अमल नहीं हो रहा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में (समानता के अधिकार) और अनुच्छेद 21 में (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का जो संवैधानिक अधिकार) दिया गया है उसके तहत किसी भी नागरिक के साथ विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के बिना कार्रवाई नहीं की जा सकती। यदि इस तरीके की कार्यवाही की जाती है, तो वह पूरी तरीके से गैर कानूनी और अवैधानिक है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रशासनिक और पुलिस द्वारा चलाए जा रहे, इस तरह के अभियानों का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया है। मुख्यमंत्री का कहना है, अपराध के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति जरूरी है। सरकार की सरपरस्ती में उत्तर प्रदेश के प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी बेखौफ होकर आम नागरिकों को दंडित करने लगे हैं, जिसके कारण उत्तर प्रदेश में न्यायपालिका एक तरह से अलग-थलग पड़ चुकी है। सरकार का यह तर्क अपनी जगह महत्वपूर्ण है, आम नागरिक सुरक्षा और शांति चाहता है। परंतु लोकतांत्रिक व्यवस्था में कानून के पालन में सख्ती और संवैधानिक मयार्दा में नियम और कानून का पालन हो यह सुनिश्चित कार्यपालिका के लिए अनिवार्य है। कानून की नजर में कोई भी व्यक्ति तब तक अपराधी नहीं माना जाता, जब तक अदालत उसे दोषी न ठहरा दे। यदि राज्य की शक्ति को दंडात्मक रूप में राज्य के अधिकारी उपयोग करने लगेंगे तो ऐसे में नागरिकों के अधिकार और न्यायिक प्रक्रिया पीछे छूट जाएगी।



सनत जैन
लेखक
ग्लोबल हेराल्ड

तनाव, आतंक और अंधकार के बीच शिव का प्रकाश



ललित गर्ग | लेखक
ग्लोबल हेराल्ड

15 फरवरी 2026 को जब समूचा भारत महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाएगा, तब यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं होगा, बल्कि आत्मजागरण का विराट अवसर होगा। महाशिवरात्रि वह रात्रि है जब साधक अपने भीतर के अंधकार को पहचानकर शिवत्व के प्रकाश से उसे आलोकित करने का संकल्प लेता है। शिव केवल देवता नहीं, वे चेतना के शाश्वत आयाम हैं- महाकाल, जो समय से परे हैं, नटराज, जो सृष्टि की लय और ताल के अधिपति हैं और नीलकंठ, जो विष को पीकर भी अमृत का संदेश देते हैं। आज का युग विज्ञान, तकनीक और उपभोग का युग है। मानव ने अंतरिक्ष को नापा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित की, लेकिन अपने भीतर की शांति खो बैठा। तनाव, अवसाद, असंतोष, युद्ध, आतंकवाद और नैतिक विघटन की घटनाएँ विश्व को विचलित कर रही हैं। ऐसे दौर में शिव की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। शिव भक्ति कोई चमत्कारिक जादू नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित करने का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक मार्ग है। शिव का स्वरूप द्वंद्वों से परे है। वे संहारक भी हैं और सृजनकर्ता भी। यह संदेश आज के समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो जड़, जर्जर और अनैतिक है, उसका विनाश आवश्यक है ताकि नवजीवन अंकुरित हो सके।

जब हम अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और मोह का संहार करते हैं, तभी सच्चा निर्माण संभव होता है। यही शिव का वास्तविक चमत्कार है भीतर के विष का रूपांतरण। समुद्र-मंथन की कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि मानवीय जीवन का प्रतीक है। जब संसार अमृत की खोज में लगा, तब सबसे पहले विष निकला। आज भी जब मानव प्रगति की दौड़ में है, तो साथ में प्रदूषण, हिंसा और असंतुलन का विष भी उत्पन्न हो रहा है। उस विष को कौन पियेगा? शिव का नीलकंठ रूप हमें सिखाता है कि समाज के संकट को दूर करने के लिए त्याग और सहनशीलता आवश्यक है। जब हम अपने स्तर पर कटुता को निगल लेते हैं और उसे बाहर नहीं फैलाते, तभी समाज में शांति बनी रहती है। इसी प्रकार गंगा के अवतरण की कथा बताती है कि अनियंत्रित शक्ति विनाशकारी हो सकती है। शिव ने उसे अपनी जटाओं में धारण कर संतुलित प्रवाह दिया। आज के संदर्भ में यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। तकनीक, धन, सत्ता-ये सभी शक्तियाँ हैं। यदि वे अनियंत्रित हों तो विध्वंसक बनती हैं, और यदि शिव-संयम में हों तो कल्याणकारी। अतः शिव भक्ति का अर्थ है-शक्ति का संतुलन। आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है-तनाव। प्रतिस्पर्धा, अपेक्षाएं और असुरक्षा ने उसे अशांत बना दिया है। शिवरात्रि की रात्रि जागरण की रात्रि है, लेकिन यह बाह्य जागरण से अधिक आंतरिक जागरण है। जब साधक ॐ नमः शिवाय का जप करता है, तो वह अपने भीतर के कंपन को संतुलित करता है। यह पंचाक्षरी मंत्र मन, प्राण और चेतना को एकाग्र करता है। वैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि नियमित ध्यान और मंत्रजाप से तनाव कम होता है, रक्तचाप संतुलित होता है और मानसिक स्थिरता बढ़ती है। यह शिव साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव है। शिव पुराण में वर्णित है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ बेला में ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ। यह ज्योति केवल पत्थर की आकृति नहीं, बल्कि अनंत प्रकाश का प्रतीक है। शिवलिंग का अर्थ है-चिह्न, जो निराकार ब्रह्म का संकेत देता है। आधुनिक मनुष्य के लिए यह बोध आवश्यक है कि ईश्वर किसी सीमित रूप में बंधा नहीं है। वह ऊर्जा है, चेतना है, जो प्रत्येक कण में विद्यमान है। आज विश्व युद्ध और आतंकवाद की विभीषिका से जूझ रहा है। हिंसा की ज्वाला में मानवता झुलस रही है। शिव का तांडव केवल विनाश नहीं, बल्कि संतुलन का नृत्य है। जब अन्याय बढ़ता है, तब परिवर्तन अनिवार्य होता है। किंतु शिव का संदेश यह भी है कि क्रोध नहीं, करुणा से परिवर्तन संभव है। वे रुद्र हैं-दुःखों का हरण करने वाले। शिव भक्ति का चमत्कार यह है कि वह मनुष्य के भीतर करुणा, सहिष्णुता और क्षमा का विकास करती है। जब व्यक्ति बदलता है, तब समाज बदलता है और जब समाज बदलता है, तब विश्व में शांति का मार्ग प्रशस्त होता हे। शिव और शक्ति का मिलन भी आधुनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह पुरुष और प्रकृति, चेतना और ऊर्जा, विचार और क्रिया का समन्वय है। आज परिवारों में विघटन, संबंधों में दूरी और जीवन में असंतुलन इसलिए है क्योंकि यह समरसता टूट रही है। शिवरात्रि हमें स्मरण कराती है कि संतुलन ही जीवन का आधार है। व्रत और उपवास का आध्यात्मिक महत्व भी आज समझने योग्य है। उपवास केवल भोजन त्याग नहीं, बल्कि इंद्रियों का संयम है। यह आत्मशुद्धि की प्रक्रिया है। जब व्यक्ति एक दिन के लिए भी भोगों से दूर रहता है, तो उसे अपनी आवश्यकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर मिलता है। उपभोक्तावादी संस्कृति में यह अत्यंत आवश्यक साधना है। शिव भक्ति का सिद्ध प्रभाव उन असंख्य भक्तों के अनुभवों में दिखाई देता है, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी आस्था नहीं छोड़ी। सच्चे मन से की गई प्रार्थना व्यक्ति को आंतरिक शक्ति देती है। यह शक्ति उसे संकटों से जूझने का साहस देती है। चमत्कार बाहर नहीं, भीतर घटित होता है- जब निराशा आशा में बदलती है, भय विश्वास में और अशांति शांति में। आज आवश्यकता है कि शिव को केवल मंदिरों तक सीमित न रखा जाए। वे काठ, पत्थर या मूर्ति में नहीं, बल्कि भाव में निवास करते हैं। जब हम सत्य बोलते हैं, करुणा का व्यवहार करते हैं, प्रकृति की रक्षा करते हैं, तब हम शिव की आराधना करते हैं। पर्यावरण संरक्षण भी शिव भक्ति है, क्योंकि वे कैलाशवासी योगी हैं, प्रकृति के संरक्षक हैं। जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी के संतुलन की रक्षा करना ही शिव के प्रति सच्ची श्रद्धा है। महाशिवरात्रि 2026 हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम अपने भीतर के विष को पहचानें और उसे शिवचेतना में रूपांतरित करें। हम अपने जीवन में संयम, संतुलन और साधना को स्थान दें। हम क्रोध के स्थान पर क्षमा, अहंकार के स्थान पर विनम्रता और अशांति के स्थान पर ध्यान को अपनाएं। शिवत्व की प्राप्ति कोई दूर की वस्तु नहीं। यह हमारे भीतर ही सुप्त है। आवश्यकता केवल जागरण की है। जब मनुष्य स्वयं को जीत लेता है, तभी वह सच्चे अर्थों में विजयी होता है। यही आत्मयुद्ध है, यही शिव की साधना है। इस महाशिवरात्रि पर हम सब मिलकर यह प्रार्थना करें-



हे नीलकंठ! हमारे भीतर के विष को शांत करो।
हे महाकाल! हमें समय का सदुपयोग सिखाओ।
हे शंकर! हमारे जीवन में कल्याण का संचार करो।

जब यह प्रार्थना सच्चे मन से होगी, तब निश्चित ही उसका प्रतिफल मिलेगा। क्योंकि शिव भाव के भूखे हैं। जहाँ निष्कपट श्रद्धा है, वहाँ शिव की कृपा अवश्य बरसती है। आधुनिक युग की जटिलताओं के बीच शिव भक्ति ही वह सेतु है, जो मनुष्य को स्वयं से, समाज को शांति से और विश्व को अमन से जोड़ सकती है। यही महाशिवरात्रि का सच्चा संदेश है-अंधकार से प्रकाश की ओर, अशांति से शांति की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर।

(नोटः इस लेख में ये दिए गए विचार लेखक के अपने विचार हैं)

कोचिंग संस्कृति और बच्चों की मौतें...

कोटा में एक और छात्रा की आत्महत्या–यह कोई साधारण खबर नहीं है और न ही किसी एक परिवार की निजी त्रासदी भर। यह उस शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक मानसिकता और तथाकथित सफलता मॉडल पर गहरा प्रश्नचिह्न है, जिसे हमने पिछले दो दशकों में बिना सवाल किए स्वीकार कर लिया है। आत्महत्या करने वाली छात्रा कृति का सुसाइड नोट केवल व्यक्तिगत पीड़ा का दस्तावेज नहीं है, बल्कि वह एक आरोपपत्र की तरह हमारे पूरे समाज के सामने खड़ा होता है–माता-पिता, कोचिंग संस्थान, स्कूल और नीति-निमार्ता सभी इसके दायरे में आते हैं।

कृति ने अपने सुसाइड नोट में भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से अपील की थी कि अगर वे सच में चाहते हैं कि कोई बच्चा न मरे, तो कोचिंग संस्थानों को जल्द से जल्द बंद कर देना चाहिए, क्योंकि ये संस्थान छात्रों को भीतर से खोखला कर देते हैं। यह कथन किसी क्षणिक आवेग का परिणाम नहीं था, बल्कि उस लंबे मानसिक उत्पीड़न की अभिव्यक्ति थी, जिसे आज लाखों छात्र रोज झेल रहे हैं। असली सवाल यह नहीं है कि कृति ने ऐसा क्यों लिखा, बल्कि यह है कि क्या वह गलत थी। आज भारत में कोचिंग शिक्षा का सहायक माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि एक विशाल और मुनाफे पर आधारित उद्योग बन चुकी है। कोटा, सीकर, हैदराबाद, दिल्ली और पटना जैसे शहर एजुकेशन हब कहलाते हैं, जहाँ हर साल लाखों किशोर अपने माता-पिता के सपनों का बोझ उठाए पहुँचते हैं। इन सपनों के केंद्र में कुछ सीमित शब्द होते हैं–आईआईटी, एम्स, नीट, रैंक और सेलेक्शन। कोचिंग संस्थान बच्चों को यह यकीन दिलाते हैं कि यदि वे चयनित नहीं हुए, तो वे असफल हैं। सफलता की यह परिभाषा इतनी संकीर्ण है कि उसमें औसत छात्र के लिए कोई जगह नहीं बचती, और असफलता से उबरने की कोई मानवीय प्रक्रिया भी नहीं होती। कृति का यह कथन कि 90+ अंक लाने वाली लड़की भी आत्महत्या कर सकती है हमारे उस भ्रम को तोड़ता है, जिसमें हम यह मान लेते हैं कि मानसिक संकट केवल कमजोर या असफल छात्रों तक सीमित है। यह सोच न सिर्फ.गलत है, बल्कि खतरनाक भी है। आज का दबाव केवल परीक्षा पास करने या अच्छे अंक लाने का नहीं रह गया है, बल्कि माता-पिता, शिक्षकों और समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का बन गया है। हर बच्चा अपने भीतर एक काल्पनिक परफेक्ट स्टूडेंट की छवि ढो रहा है, जिससे वह लगातार हारता चला जाता है। ऊँचे अंक और बेहतर प्रदर्शन भी अब मानसिक शांति की गारंटी नहीं रहे, क्योंकि समस्या पढ़ाई की नहीं, बल्कि उस माहौल की है जिसमें पढ़ाई कराई जा रही है। कृति द्वारा अपनी माँ के लिए लिखी गई पंक्तियाँ इस पूरे संकट की जड़ को उजागर करती हैं। वह बताती है कि उसे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर किया गया, जबकि उसकी वास्तविक रुचि अंग्रेजी साहित्य और इतिहास में थी। यह कहानी किसी एक घर तक सीमित नहीं है। यह देश के हजारों, बल्कि लाखों घरों की सच्चाई है, जहाँ बच्चे की रुचि से ज्यादा समाज की अपेक्षा मायने रखती है।



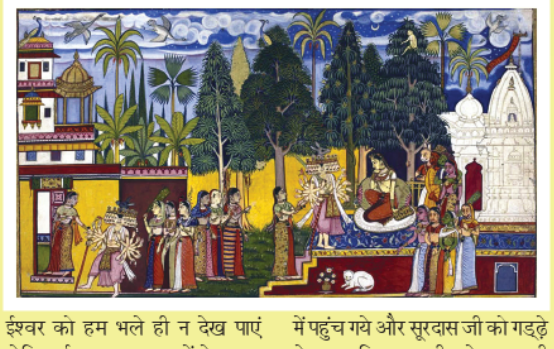


-प्रियंका सौरभ
लेखिका
ग्लोबल हेराल्ड

माता-पिता अक्सर यह भूल जाते हैं कि बच्चा उनकी अधूरी महत्वाकांक्षाओं का विस्तार नहीं है, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है। सामाजिक तुलना–कि फलाँ का बेटा डॉक्टर बन गया या फलाँ की बेटी आईआईटी में पहुँच गई–हमें इतना अंधा कर देती है कि हम बच्चों की इच्छाओं, क्षमताओं और सीमाओं को अनदेखा कर देते हैं। कृति ने अपनी छोटी बहन को लेकर जो चेतावनी दी, वह इस सुसाइड नोट को और भी मार्मिक बना देती है। वह चाहती है कि उसकी बहन को वही पढ़ने दिया जाए, जो वह पढ़ना चाहती है, और वही बनने दिया जाए, जो वह बनना चाहती है। यह विडंबना है कि मरते समय भी वह किसी और की ज़िंदगी बचाने की कोशिश कर रही थी। यह चेतावनी केवल एक माँ के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए है, जो बच्चों को सुनने के बजाय उन पर अपने सपने थोपता है। आज के स्कूल और कोचिंग संस्थान बच्चों को गणित के सूत्र, रसायन के समीकरण और प्रतियोगी परीक्षाओं की रणनीतियाँ तो सिखा रहे हैं, लेकिन जीवन के सबसे जरूरी पाठ सिखाने में पूरी तरह असफल हो रहे हैं। वे बच्चों को यह नहीं सिखा पा रहे कि असफलता से कैसे निपटना है, मानसिक तनाव को कैसे समझना हे और मदद माँगना कमजोरी नहीं है। प्रतिस्पर्धा को प्रेरणा के बजाय भय का औजार बना दिया गया है। रैंक लिस्ट, मॉक टेस्ट और लगातार तुलना बच्चों के मन में स्थायी हीनभावना भर देती है, जिससे वे खुद को केवल अंकों और चयन के चश्मे से देखने लगते हैं। हर ऐसी मौत के बाद सरकार की ओर से औपचारिक बयान आते हैं, जाँच के आदेश दिए जाते हैं और कुछ दिनों तक बहस चलती है। इसके बाद सब कुछ फिर सामान्य हो जाता है। न कोचिंग संस्थानों के कामकाज पर सख़्त निगरानी होती है, न उनके घंटे सीमित किए जाते हैं, न मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाता है। यदि सरकार सच में गंभीर है, तो कोचिंग उद्योग के लिए सख़्त नियमन, छात्रों के लिए सुलभ मानसिक स्वास्थ्य सहायता और स्कूल स्तर पर करियर की विविध संभावनाओं को स्वीकार करने की ठोस नीति बनानी होगी। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि हम सफलता को किस रूप में परिभाषित करते हैं। क्या एक अच्छा इंसान बनना, मानसिक रूप से स्वस्थ रहना और अपनी रुचि के क्षेत्र में संतुष्ट जीवन जीना सफलता नहीं है? यदि नहीं, तो हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहे हैं जो चयनित तो होगी, लेकिन भीतर से टूटी हुई और असंतुष्ट होगी। कृति की मौत हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि कहीं हम अपने बच्चों को ज़िंदा रहते हुए ही तो नहीं मार रहे–उनकी इच्छाओं को, उनके सपनों को और उनकी स्वतंत्रता को। कृति का सुसाइड नोट केवल एक छात्रा की अंतिम अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी है। अगर अब भी हमने नहीं सुना, नहीं समझा और नहीं बदले, तो ऐसी घटनाएँ रुकने वाली नहीं हैं। सवाल यह नहीं है कि अगला बच्चा कौन होगा। असली सवाल यह है कि क्या हम अगले बच्चे को बचा पाएँगे।

(नोटः इस लेख में ये दिए गए विचार लेखक के अपने विचार हैं)

भक्तों की सहायता करते हैं ईश्वर



ईश्वर को हम भले ही न देख पाएं लेकिन ईश्वर हर क्षण हमें देख रहा होता है। उसकी दृष्टि हमेशा अपने भक्तों एवं सद्वयक्तियों पर रहती है। अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि जीवन में कभी न कभी कठिन समय में ईश्वर स्वयं आकर आपकी सहायता कर चुके हैं। उस कठिन समय में आपके अंदर भक्ति की भावना उमड़ रही होगी और आप ईश्वर को याद कर रहे होंगे। शास्त्र कहता है कि ईश्वर के लिए संसार का हर जीव उसकी संतान के समान है। जो व्यक्ति उसके बनाये नियमों का पालन करते हुए जीवन यापन करता है ईश्वर उसकी सहायता अवश्य करते हैं।

गजराज की कहानी आपने जरूर सुनी या पढ़ी होगी। नदी में गजराज को मगरमच्छ ने पकड़ लिया। इस कठिन समय में गजराज ने भगवान को पुकारा और भगवान विष्णु प्रकट हो गये। भगवान ने अपने चक्र से मगरमच्छ का सिर काट दिया और गजराज के प्राण की रक्षा की। सूरदास जी के जीवन की भी एक ऐसी ही कथा है। सूरदास जी देख नहीं सकते थे। एक वार गलती से एक गड्ढे में गिर गये। गड्ढे से निकलने का काफी प्रयास करने पर भी वह वाहर निकलने में असफल रहे। इस स्थिति में सूरदास जी ने गोपाल को पुकारा। भगवान श्री कृष्ण वालक रूप में पहुंच गये और सूरदास जी को गड्ढे से वाहर निकाला। मीरा के प्राण की रक्षा के लिए भगवान ने मीरा को मारने के लिए भेजे गये विष को प्रभावहीन कर दिया। वघेलखण्ड के वान्धवगढ़ में रहने वाले सेन नामक नाई की भी भगवान ने सहायता की और वघेलखंड का राजा सेन नाई का भक्त वन गया। यह घटना पांच छः सौ साल पुरानी है। सेन नाई राजा की सेवा करता था। इसका काम प्रतिदिन राजा की हजामत वनाना और तेल मालिश कर-के स्नान कराना था। एक दिन सेन नाई जव राजमहल की ओर चला तव रास्ते में संतों की टोली मिल गयी। नाई उन्हें लेकर घर आ गया और उनकी खूव सेवा की। संतों के साथ वैठकर संत्संग में भाग लिया। राजा के स्नान करने का समय वीता जा रहा था। नाई के नहीं आने से राजा क्रोधित हो रहे थे। इसी समय भगवान स्वयं सेन नाई का वेष धारणकर राजा की सेवा में पहुंच गये। नई वने भगवान की सेवा से राजा का क्रोध दूर हो गया और मन हर्षित हो गया। सत्संग समाप्त होने के वाद सेन नाई को याद आया कि राजा की सेवा में देरी हो गयी है। हजामत का सामान लेकर डरता हुआ सेन नाई राजमहल में पहुंचा। राजा को देर से आने का कारण वताने लगा। इस पर राजा ने कहा कि तुम तो मेरी हजामत वना चुके हो।

ग्लोबल हेराल्ड में प्रकाशित होने वाले लेख लेखकों के निजी विचार है

व्यापार

भारतीय शेयर बाजार में सप्ताह भर उतार-चढ़ाव, शुरूआती तेजी के बाद गिरावट

मुंबई ■



भारतीय शेयर बाजार ने शुक्रवार तक समाप्त हुए सप्ताह में मिश्रित रुझान दिखाया। सप्ताह की शुरूआत में सकारात्मक आर्थिक संकेत और भारत-अमेरिका के बीच व्यापार समझौतों की उम्मीद से निवेशकों का मनोबल ऊंचा रहा, लेकिन सप्ताह के अंत तक वैश्विक कमजोर संकेतों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से जुड़ी संभावित व्यवधानों की चिंताओं के कारण बाजार ने गिरावट दर्ज की।

सप्ताह के पहले दिन सोमवार को भारतीय शेयर बाजार हरे निशान पर खुला। विदेशी निधियों के प्रवाह और एशियाई बाजारों की मजबूती ने निवेशकों के मनोबल को बढ़ाया। शुरूआती कारोबार में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 415.97 अंक बढ़कर 83,996.37 पर पहुंचा, जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 126.05 अंक बढ़कर 25,819.75 पर पहुंच गया। दिन के अंत में सेंसेक्स 485.35 अंक की बढ़त के साथ 84,065.75 पर और निफ्टी 173.60 अंक की बढ़त के साथ 25,867.30 पर बंद हुआ। मंगलवार को भी बाजार की गति बनी रही। एशियाई बाजारों के सकारात्मक रुझान और अमेरिका के साथ अंतरिम व्यापार ढांचे पर आशावाद ने निवेशकों का उत्साह बनाए रखा। शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 247.01 अंक बढ़कर 84,312.76 पर और निफ्टी 80.25 अंक बढ़कर 25,947.55 पर पहुंच गया। बुधवार को बाजार में शुरूआती तेजी देखी गई, सेंसेक्स 213.42 अंक बढ़कर 84,487.34 पर और निफ्टी 74.25 अंक बढ़कर 26,009.40 पर पहुंच गया। हालांकि, उच्च स्तर पर मुनाफा लेने की प्रवृत्ति ने दोनों सूचकांकों में अस्थिरता ला दी। दिन के अंत में सेंसेक्स 40.28 अंक गिरकर 84,233.64 पर और निफ्टी 18.70 अंक बढ़कर 25,953.85 पर बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन शुक्रवार को बाजार में तेज गिरावट देखी गई। कमजोर वैश्विक संकेतों और एआई से जुड़े व्यवधानों की बढ़ती चिंताओं के कारण निवेशकों की भावना नकारात्मक रही। शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 883.4 अंक गिरकर 82,791.52 पर और निफ्टी 262.60 अंक गिरकर 25,544.60 पर पहुंच गया।

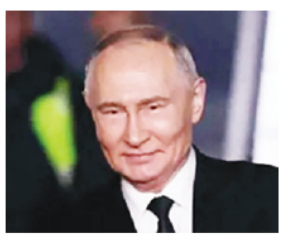
रूस से तेल बंद करने का दबाव, भारत को हो सकता है भारी आर्थिक और रणनीतिक हितों को नुकसान

नई दिल्ली ■

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते की चर्चाएं तेज हैं। हालिया घोषणा के अनुसार भारत और अमेरिका ने एक अंतरिम समझौते पर सहमति व्यक्त की, जिसके तहत अमेरिकी वस्तुओं पर भारत के लगाए गए टैरिफ घटाए गए हैं, और अमेरिका उम्मीद कर रहा है कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रूस से तेल खरीदना कम करे और वेनेजुएला से तेल खरीदे।

लॉजिस्टिक्स और लागत

रूस से भारत तक तेल आने में औसतन 36 दिन लगते हैं, जबकि वेनेजुएला से 54 दिन। दूरी बढ़ने से प्रति बैरल लगभग 2 डॉलर अतिरिक्त खर्च आएगा। इसके अलावा, वेनेजुएला का उत्पादन रोजाना



लगभग 10 लाख बैरल है, जबकि भारत रूस से रोजाना 16 लाख बैरल आयात करता था। इसका मतलब है कि वेनेजुएला अकेले रूस की आपूर्ति की भरपाई नहीं कर सकता।

रिफाइनिंग की चुनौती

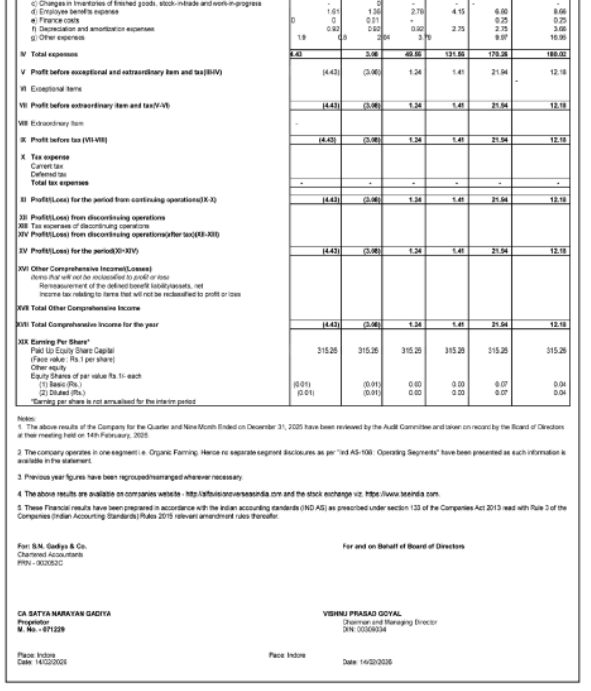
भारत की प्राइवेट रिफाइनरियां (जैसे रिलायंस जामनगर, नायरा एनर्जी) वेनेजुएला का भारी तेल संसाधित कर सकती हैं और मुनाफा कमाती हैं। लेकिन सरकारी रिफाइनरियां मुख्य रूप से रूसी और मध्य पूर्वी तेल के लिए डिजाइन हैं। वे वेनेजुएला के तेल को कुशलतापूर्वक रिफाइन नहीं कर पाएंगी, जिससे सरकारी कंपनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

भू-राजनीतिक असर

अगर भारत रूस से तेल खरीदना बंद करता है, तो रूस के बड़े ग्राहक के रूप में चीन उभर सकता है, जिससे रूस-चीन का गठबंधन मजबूत होगा। यह भारत की सुरक्षा और रणनीतिक हितों के लिए चुनौती पैदा कर सकता है।

रक्षा और निवेश पर प्रभाव

भारत रूस को तेल के बदले रुपये में भुगतान करता है, जिससे रूस के पास भारत में निवेश के लिए बड़ा फंड जमा होता है। अगर भारत तेल खरीदना बंद करता है, तो यह तंत्र ध्वस्त हो सकता है और निवेश योजना प्रभावित होगी।



ALFAVISION OVERSEAS (INDIA) LTD.
CIN - L67120MP1994PLC008375
Registered Office - 135, Old Gouri Nagar, Indore, Indore DOU Nagar Madhya Pradesh, 452018
Website : www.alfavisionoverseasindia.com, Email :alfavision@alfavalley.in
Unaudited IndAS Financial Results for the Quarter and Nine Months Ended on 31th December, 2025 in compliance with Indian Accounting Standards

(Rs. In Lakhs except per share Data)

Particulars (Refer notes below)	Quarter Ended 31-Dec-25 (Unaudited)	Quarter Ended 30-Sep-25 (Unaudited)	Quarter Ended 31-Dec-24 (Unaudited)	Nine Month Ended 31-Dec-25 (Unaudited)	Nine Month Ended 31-Dec-24 (Unaudited)	Year Ended 31-Mar-25 (Audited)
I Revenue from operations	0.00	0	46.20	132.97	190.60	190.60
II Other income	0.00	0	1.80	-	1.80	1.80
III Total revenue(I+II)	-	-	50.80	132.97	192.39	192.39
Expenses						
a) Cost of Material Consumed	0	0	43.81	120.67	43.81	-
b) Purchase of stock in-trade	-	0	-	-	106.68	150.59
c) Changes in Inventories of finished goods, stock-in-trade and work-in-progress	-	0	-	-	-	-
d) Employee benefits expense	1.61	1.36	2.76	4.15	6.80	8.66
e) Finance costs	0	0.01	-	-	0.25	0.25
f) Depreciation and amortization expenses	0.92	0.92	0.92	2.75	2.75	3.68
g) Other expenses	1.9	0.8	2.04	3.78	9.97	16.86
IV Total expenses	4.43	3.08	49.55	131.55	170.26	180.00
V Profit before exceptional and extraordinary item and tax(III-IV)	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
VI Exceptional items						
VII Profit before extraordinary item and tax(V-VI)	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
VIII Extraordinary item	-					
IX Profit before tax (VII-VIII)	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
X Tax expense						
Current tax						
Deferred tax						
Total tax expenses	-	-	-	-	-	-
XI Profit/(Loss) for the period from continuing operations(IX-X)	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
XII Profit/(Loss) from discontinuing operations						
XIII Tax expenses of discontinuing operations						
XIV Profit/(Loss) from discontinuing operations(after tax)(XII-XIII)						
XV Profit/(Loss) for the period(XI+XIV)	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
XVI Other Comprehensive Income/(Losses)						
Items that will not be reclassified to profit or loss						
Remeasurement of the defined benefit liability/assets, net						
Income tax relating to items that will not be reclassified to profit or loss						
XVII Total Other Comprehensive Income						
XVIII Total Comprehensive Income for the year	(4.43)	(3.08)	1.24	1.41	21.94	12.19
XIX Earning Per Share*						
Paid Up Equity Share Capital (Face value : Rs.1 per share)	315.26	315.26	315.26	315.26	315.26	315.26
Other equity						
Equity Shares of par value Rs.1/- each						
(1) Basic (Rs.)	(0.01)	(0.01)	0.00	0.00	0.07	0.04
(2) Diluted (Rs.)	(0.01)	(0.01)	0.00	0.00	0.07	0.04

*Earning per share is not annualised for the interim period

Notes:
1. The above results of the Company for the Quarter and Nine Month Ended on December 31, 2025 have been reviewed by the Audit Committee and taken on record by the Board of Directors at their meeting held on 14th February, 2026.
2. The company operates in one segment i.e. Organic Farming. Hence no separate segment disclosures as per "Ind AS-108 - Operating Segments" have been presented as such information is available in the statement.
3. Previous year figures have been regrouped/rearranged wherever necessary.
4. The above results are available on comapanies website - http://alfavisionoverseasindia.com and the stock exchange viz. https://www.bseindia.com.
5. These Financial results have been prepared in accordance with the Indian acc